LECTURER (SAMHITA & SIDHHANTA) (PAPER-II) (S.A.T.)

Time Allowed: 03 Hours | निर्धारित समय: 03 घंटे

Maximum Marks: 120 | अधिकतम अंक: 120

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

प्रश्न पत्र संबंधी विशेष अनुदेश

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions.

उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को कृपया सावधानीपूर्वक पढ़ें ।

1. There are **EIGHT** questions printed in both English and Hindi in TWO Parts.
   आठ प्रश्नों को दो भागों में विभाजित किया गया है जो कि अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में छपे है ।

2. Candidate has to attempt **(06) SIX** questions in all either in English or Hindi by choosing at least **(03) THREE** questions from each part.
   उम्मीदवार को कुल छः प्रश्नों के उत्तर अंग्रेजी या हिन्दी में देने हैं । प्रत्येक भाग से कम से कम तीन प्रश्नों के उत्तर देने होगें ।

3. All questions carry equal marks. Each question will consist of 04 sub parts having 05 marks and word limit will be 150 words for each sub-part.
   सभी प्रश्नों के समान अंक हैं । प्रत्येक प्रश्न के चार उप भाग होंगे तथा प्रत्येक उप भाग के 05 अंक होंगे ।

4. Write answers in legible handwriting. Illustrate your answers with suitable sketches, diagrams and figures, wherever considered necessary.
   सुपाठ्य लिखावट में उत्तर लिखिए । जहां भी आवश्यक समझा जाए, वहाँ अपने उत्तरों को उपयुक्त रेखाचित्रों, आरेखों और आंकड़ो के साथ स्पष्ट कीजिए ।

5. Each part of the question must be answered in sequence and in the same continuation.
   प्रश्न के प्रत्येक भाग का उत्तर क्रमानुसार दिया जाए ।

6. Attempts of the questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in answer book must be clearly struck off.
   प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी । आंशिक रुप से दिए गए प्रश्नों के उत्तर को भी मान्यता दी जाएगी यदि उसे काटा नहीं गया हो । खाली छोड़े गए कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए ।

7. In case of bilingual papers, if there is any difference in English and Hindi version of the question, the English version shall be treated as correct and final.
   द्विभाषी पेपर के मामले में, यदि प्रश्न के अंग्रेजी और हिंदी संस्करण में कोई अंतर है, तो अंग्रेजी संस्करण को सही और अंतिम माना जाएगा।

IMPORTANT NOTE: ANSWER ANY (03) THREE QUESTIONS FROM EACH PART.

महत्वपूर्ण नोट: **प्रत्येक भाग में से किन्हीं** (03) **तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

PART – 1 (भाग –1) (60 Marks)

Q. No. 1: Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें ।

1. What is meant by Textual Criticism, Methods adopted along with its relevance? Textual Criticism से क्या तात्पर्य है, इसकी प्रासंगिकता एवम विधियों की सविस्तार व्याख्या करें|

2. Explain the therapeutic application of बीजंचिकित्सितस्यैतत्समासेन प्रकीर्तितम्".
"बीजं चिकित्सितस्यैतत्समासेन प्रकीर्तितम्" के चिकित्सीय प्रयोग की व्याख्या करे|

3. Explain in detail about "पङ्गवन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः" with Reference.
"पङ्गवन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः "को ससन्दर्भ विस्तार से वर्णन करें |

4. What are the characteristic features of हितायु as well as सुखायु as per Ayurveda?
आयुर्वेद के अनुसार हितायु और सुखायु के लक्षणो का वर्णन करें |

Q. No. 2. Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें ।

1. What is the significance of understanding ताच्छिल्य in context of Teaching Methodology in Ayurveda?
आयुर्वेद में शिक्षण पद्धति के संदर्भ में ताच्छिल्य के महत्व को दर्शाइये |

2. "अच्छे संशोधने चैव स्नेहे का वृत्तिरिष्यते" can be understood on the basis of which न्याय? Explain this Nyaya in detail along with one reference from बृहत्रयी.
"अच्छे संशोधने चैव स्नेहे का वृत्तिरिष्यते" कोकिस न्याय के आधार पर समझा जा सकता है ? इस न्याय को बृहत्रयी के एक सन्दर्भ सहित विस्तार से समझाइये।

3. Explain in detail with reference about "तन्त्रनियतानामर्थदुर्गाणां पुनर्विभावनैरुक्तम".

"तन्त्रनियतानामर्थदुर्गाणां पुनर्विभावनैरुक्तम" को ससंदर्भ विस्तार से समझाइये |

4. What is "यमर्थमसिद्धमपरीक्षितमनुपदिष्टमहेतुकं वा". Interpret its relevance in context of Research Methodology.
"यमर्थमसिद्धमपरीक्षितमनुपदिष्टमहेतुकं वा" क्याहै? अनुसंधान पद्धति के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता की विस्तार से व्याख्या करें।

Q. No. 3. Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें ।

1. Discuss in detail along with reference the context explained in Verse"
"स सर्वगः सर्वशरीरभृच्च स विश्वकर्मा स च विश्वरूपः"
"स सर्वगः सर्वशरीरभृच्च स विश्वकर्मा स च विश्वरूपः" श्लोक में बताये गये विषय की ससंदर्भ विस्तार से वर्णन कीजिये।

2. Explain the various rationale given by Acharya *Chakrapani* for considering युक्ति as प्रमाण.

युक्ति को प्रमाण मानने के लिए आचार्य चक्रपाणि द्वारा दिए गए विभिन्न तर्कों की व्याख्या करें ।

3. Discuss in detail the concept of "दोषानुशयिताह्येषां" in context of *Deha Prakriti*.

देह प्रकृति के संदर्भ मे "दोषानुशयिताह्येषां" का सविस्तार वर्णन करे |

4. As per *Chakrapani* define आप्ता, शिष्टाः and विबुद्ध

चक्रपाणि के अनुसार आप्ता, शिष्टाः एवं विबुद्ध को परिभाषित करे |

Q. No. 4. Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें ।

1. Explain in detail the concept having the characteristics of "व्याप्तिस्मरणसहायलिङ्गदर्शनम्"
"व्याप्तिस्मरणसहायलिङ्गदर्शनम्" युक्त लक्षण के विषय को विस्तार से वर्णन करे|

2. Elaborate about प्रबोधन and प्रकाशन Karma of Tantrayukti.

तंत्रयुक्ति के प्रबोधन और प्रकाशन कर्म के बारे में विस्तार से बताएं |

3. What is explained as "ज्ञानाभियोगसंहर्षकरी" by Acharya Charaka. Explain this concept in detail.
आचार्य चरक द्वारा वर्णित "ज्ञानाभियोगसंहर्षकरी" विषय की विस्तार से व्याख्या करे |

4. Explain the significance of *Chatushka* Methodology of Charaka Samhita.
चरक संहिता की चतुष्क पद्धति का महत्व बताइए |

PART – 2 (भाग–2) (60 marks)

Q. No. 5. Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें ।

1. Interpret the relevance of concept of "विजातीयव्यावर्तकलक्षणकथनम्" in context of षडपदार्थ.
षड्पदार्थ के सन्दर्भ मे "विजातीयव्यावर्तकलक्षणकथनम्" का अभिप्राय वर्णित करे |
2. Explain in detail "चेष्टाप्रत्ययभूतमिन्द्रियाणाम्"
"चेष्टाप्रत्ययभूतमिन्द्रियाणाम्" का विस्तार से वर्णन करे |
3. Describe with reference "वृत्युपायान्निषेवेत ये स्युर्धर्माविरोधिनः"
"वृत्युपायान्निषेवेत ये स्युर्धर्माविरोधिनः" की ससंदर्भ व्याख्या करे ।
4. What are the Key Principles of Publication Ethics ?
Publication Ethics के मुख्य सिद्धान्तो का विस्तार से वर्णन करे |

Q. No. 6. Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें ।

1. Explain with reference "तस्मादपरीक्षितमेतदुच्यते- प्रत्यक्षमेवास्ति, नान्यदस्तीति "in detail.
"तस्मादपरीक्षितमेतदुच्यते- प्रत्यक्षमेवास्ति, नान्यदस्तीति" संदर्भ सहित विस्तार से समझाइये।
2. Write in detail about "समानेष्वर्थेष्वेकत्राभिहितो विधिरन्यत्राप्यनुषञ्जनीयः"
"समानेष्वर्थेष्वेकत्राभिहितो विधिरन्यत्राप्यनुषञ्जनीयः" के बारे में विस्तार से लिखें।

3. Explain in detail about भूतग्राम explained by *Acharya Sushruta*.
   आचार्य सुश्रुत द्वारा बताए गए भूतग्राम के बारे में विस्तार से बताएं |

4. Explain with reference "नित्यानुशायिनं रोगं दीर्घकालमवस्थितम्"
   संदर्भ सहित "नित्यानुशायिनं रोगं दीर्घकालमवस्थितम्" को स्पष्ट करें।

Q. No. 7. Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें ।

1. Explain in detail about the concept of स्वभाववाद by quoting references from Brihatrayees.
   बृहत्रयी के सन्दर्भों को उद्धृत करते हुए स्वभाववाद की अवधारणा को स्पष्ट करे |

2. What key concepts are discussed in "अनुबन्धचतुष्टय"?
   "अनुबन्धचतुष्टय" में किन प्रमुख विषयो की व्याख्या की गई है ?

3. Explain with reference where the concept of परमाणुवाद is explained in Charaka Samhita
   चरक संहिता में परमाणुवाद की अवधारणा को कहाँ समझाया गया है, इसे संदर्भ देकर स्पष्ट करें |

4. Explain the concept described with analogy - "प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः"
   "वृत्तिः प्रदीपवच्छार्थो" इस उपमा के आधार पर इन्गित विषय का वर्णन करे |

Q. No. 8. Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें ।

1. Describe in detail about "पापं कर्मेति दशधा कायवाङ्मनसैस्त्यजेत्" as per सर्वाङ्ग सुन्दरा टीका.
   सर्वांग सुंदरा टीका के अनुसार "पापं कर्मेति दशधा कायवाङ्मनसैस्त्यजेत्" के बारे में विस्तार से वर्णन करें |

2. Discuss in detail about "उपधा हिपरो हेतुर्दुःखदुःखाश्रयप्रदः"
   "उपधा हिपरो हेतुर्दुःखदुःखाश्रयप्रदः" का विस्तार से वर्णन करे |

3. Explain the संप्राप्ति as well as चिकित्सासूत्र of disease which is described as "महागदं महावेगमग्निवच्छीघ्रकारि च" as per Acharya Charaka.
   आचार्य चरक अनुसार जिस रोग को "महागदं महावेगमग्निवच्छीघ्रकारि च" कहा गया है उसकी संप्राप्ति एवम् चिकित्सा सूत्र का वर्णन करे |

4. Explain the characteristics of समशन, अध्यशन and विषमाशन as mentioned by Acharya Charaka.
   आचार्य चरक अनुसार समशन, अध्यशन और विषमाशन को स्पष्ट कीजिए |

Space for rough work

Space for rough work